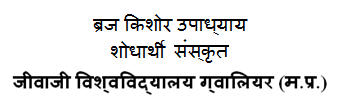
“रामायण पर आधारित रावण की नीतियों का एक अध्ययन''

****

**सार**

राम और रावण की अलग -अलग नीतियां थीं राम की नीतियों में पारदर्शिता थी वे सामाज के लिए एक आदर्श पुरुष थे, तथा भारतीय संस्‍कृति के उन्‍नायक एवं वीर पुरुष माने जाते हैं। इसके विपरीत रावण की राज्‍यनीति में अहंकार था, रावण के चरित्र में समता एवं विसमता दोनों देखने को मिलती हैं। वह एक अच्‍छा कुशल राजनीतिज्ञ था, जिसकी सोच सकारात्‍मक थी। परन्‍तु रावण का अस्तित्‍व अतीत से लेकर वर्तमान काल तक कहीं-न-कहीं समाज में देखने को मिलता है। जब तक सृष्टि का अस्तित्‍व रहेगा तब तक राम एवं रावण रूपी पात्र दोनों ही समाज में विद्यमान रहेंगे। दोनों का व्‍यक्तित्‍व अलग-अलग है, तथा समाज के लोग किवदंतियों एवं जनश्रुतियों के रूप में उनका अपना आदर्श मानते रहेंगे।

**परिचय**

**रामायण का स्‍वरूप:-**

रामायण महाकाव्‍य जिस रूप में उपलब्‍ध है वह अविचल रूप से महर्षि वाल्‍मीकि की रचना नहीं मानी जाती। अत: आदि रामायण की रचना के उपरान्‍त समय-समय पर नवीन उपाख्‍यान जुड़ते गये। समय के दीर्घ अन्‍तराल में श्‍लोकों के क्रम में परिवर्तन तथा पाठ भेद होना स्‍वाभाविक है। अत: रामायण के दो स्‍वरूप दर्शित होते हैं।

1. प्रथम वाल्‍मीकि कृत मूल रामायण जिसमें आठ हजार (8000) श्‍लोक प्राप्‍त है। अत: अयोध्‍याकाण्‍ड से युद्धकाण्‍ड तक सिर्फ पांच(5) काण्‍ड है।

2. द्वितीय वर्तमान में प्रचलित रामायण जिसमें चौबीस हजार (24000) श्‍लोक प्राप्‍त हैं। अत: यह बालकाण्‍ड से उत्‍तराकाण्‍ड पर्यन्‍त सात काण्‍ड हैं। चौबीस हजार (24000) श्‍लोक होने से ये चतुर्विंश संहिता के नाम से भी प्रचलित है।

**वाल्‍मीकि रामायण की संक्षिप्‍त कथा-**

रामायण सर्वप्रथम महात्‍म्‍य दिया हुआ है। सर्वप्रथम रामायण की पाठ विधि फिर कलयुग की स्थिति, कलिकाल में मनुष्‍यों के उद्धार का उपाय, नारद सनत्‍कुमार संवाद, सुदास या सोमदत्‍त नामक ब्राह्मण को राक्षसत्‍व की प्राप्ति तथा रामायण श्रवण द्वारा उद्धार।

**आध्‍यात्‍म रामायण का परिचय -**

आध्‍यात्‍म रामायण अति प्राचीन तथा विश्‍व का प्रथम रामायण ग्रन्‍थ है। इसके बारे में कुछ विशेष कहने की आवश्‍यकता नहीं है। यह कथा आदि शक्ति मां पार्वती की जिज्ञासा पर स्‍वयं भगवान शिव ने सुनाई थी।

इस रामायण में उपदेश भाग की अपेक्षा कथा भाग बहुत महत्‍वपूर्ण है। आज हम जिस रामचरितमानस का श्रवण कर कृतकृत्‍य मान रहे हैं, उस रामचरितमानस का आधार यही रामायण है।

यह अध्‍यात्‍म रामायण का महात्‍म्‍य श्री ब्रह्माजी ने मुनिराज नारद से कहा है।

**आध्‍यात्‍म रामायण की संक्षिप्‍त कथा-**

रामायण में सर्वप्रथम महात्‍म्‍य दिया हुआ है। पार्वतीजी द्वारा शंकर जी के मुख द्वारा रामकथा का श्रवण करना एवं उसी समय एक कौवे का जो कि पूर्व जन्‍म में काकभुशुण्डि के रूप में जन्‍म लेना व रामकथा का प्रचार करने हेतु उसे अपने शिष्‍यों एवं अन्‍य को सुनना। सर्वप्रथम रामायण श्रवण तथा पाठन द्वारा मनुष्‍य का उद्धार।

**रावण की राज्‍य नीति का परिचय -**

लंकाधिपति रावण अपनी राज्‍यनीति के कारण जाना जाता है।

**राज्‍यनीति का वर्गीकरण-**

राज्‍यनीति का क्षेत्र उतना ही व्‍यापक है जितना मानव जीवन। मानव जीवन का कोई भी कौना ऐसा नहीं है जहां नीति की आवश्‍यकता ना हो। उसी प्रकार राजा या राष्‍ट्र की बुनिया उसकी नीति पर निर्भर करती है। इसी आधार को देखें तो रावण की राज्‍य नीति विशिष्टिता का प्रतीक है। रावण राज्‍य नीति के कई आधार दिये-

**देशकाल तथा स्‍थायित्‍व के आधार पर-**

सामयिक नीति, शास्‍वत नीति, एकदेशीय नीति, सर्वदेशीय नीति

**सामाजिक संगठनों के आधार पर-**

वैयक्तित्‍व नीति, पारिवारिक नीति, सामाजिक नीति, राष्‍ट्रीय एवं अंतराष्‍ट्रीय नीति।

**विषय व्‍यापार के आधार पर-**

अर्थनीति, व्‍यापार नीति, शिक्षा नीति, विज्ञान नीति, युद्ध नीति, प्रशासन नीति।

**इनके अतिरिक्‍त अन्‍य भी भेद सामने आते हैं-**

**व्‍यय के आधार पर -** वाल नीति, वरण नीति, वृद्ध नीति।

**सम्‍बन्‍धों के आधार पर-** पिता नीति, पुत्र नीति, बंधु नीति।

**अधिकार के आधार पर-** स्‍वामी नीति, सेवक नीति, सखा नीति।

**इन नीतियों के अलावा और भी अनेक नीतियों का प्रचलन लंका में देखने को प्राप्‍त हुए हैं-**

लोक नीति, राजनीति, आर्थिक नीति, धार्मिक नीति।

प्रत्‍येक राजा की राज्‍य नीति ही राज्‍य के उत्‍थान व पतन का मार्ग तय करती है। साम, दाम, दण्‍ड आदि नीतियों के आधार पर शुक्राचार्य, दशानन को उपदेश देते थे शत्रु के लिए सर्वप्रथम साम नीति का प्रयोग। यदि इससे कार्य सिद्ध न हो तो दान नीति और इससे भी कार्य पूर्ण न हो तो भेद नीति यदि इन नीतियों से सफलता प्राप्‍त नहीं हो तो अन्‍त में दण्‍ड नीति का प्रयोग करना चाहिए।

**राज्‍य नीति का उद्देश्‍य-**

राजा व प्रजा के जीवन आदर्श की खोज ही राज्‍य नीति का प्रयोजन है। जीवन को आदर्श के आधार पर ही जीव अच्‍छे आचार विचारों को निर्धारित करता है। अत: इसका मुख्‍य प्रयोजन प्रजा को सभ्‍य एवं सुसंस्‍कृत बनाना है। अरविन्‍दके मतानुसार नीति युक्‍त जीवन का लक्ष्‍य समाज, राज्‍य व मानव कल्‍याण है। वस्‍तुत: इसका ध्‍येय मानव जीवन को परिष्‍कृत रूप प्रदान करना व इन नियमों के माध्‍यम से समस्‍त प्रजा का आचरण, नैतिक व्‍यवहारसे युक्‍त कर उन्‍हें सन्‍मार्ग पर लाना है।

अत: राम राज्‍य के माध्‍यम से तथा रावण राज्‍य की समृद्धि के द्वारा आदर्श राज्‍य का स्‍वरूप वर्णित किया गया है। राज्‍य में प्रत्‍येक प्रकार की समृद्धि श्रेष्‍ठ राज्‍यनीति के द्वारा ही संभव है। अत: आध्‍यात्‍म रामायण में वर्णित राज्‍यनीति की आवश्‍यकता इन सब उदाहरणों से सिद्ध होती है।

**रावण की युद्धनीति-**

रामायण, महाभारत, अर्थशास्‍त्र आदि प्राचीन साहित्‍यों में युद्ध नीति एवं रण कौशल की विभिन्‍न नीतियां प्राप्‍त होती हैं। रामायण में सामरिक संस्‍कृति के दो प्रतिमान देखने को मिलते हैं। एक ओर राम की युद्ध नीति दूसरी रावण की युद्ध नीति। शत्रु की अवधारणा, शक्ति के स्‍वरूप, बल प्रयोग तथा उनकी सीमा के संबंध में राम और रावण की युद्ध नीति दो भिन्‍न-भिन्‍न रूप में प्रस्‍तुत होती है। राम की युद्ध नीति का आधार धर्म, न्‍याय तथा लोक मंगल था तथा रावण की युद्ध नीति का आधार वर्चस्‍व, रक्ष संस्‍कृति की स्‍थापना है। रावण की युद्ध नीति में भौतिकवाद पर बल दिया गया है। इसमें भौतिक लाभ की प्राप्ति, संरक्षण तथा उसके विस्‍तार के लिए युद्ध की रणनीति के किसी भी रूप को अपनाने के लिए तत्‍पर रहता था। रावण बल प्रयोग को वर्चस्‍व एवं राज्‍य विस्‍तार का साधन स्‍वीकार करता था।

राम की नीतियों में आदर्शवाद अैर यथार्थवाद का अद्भुत संगम देखने को प्राप्‍त होता है। राम के चिन्‍तन का मूल तत्‍व धर्म है। धर्म का आशय न्याय, लोक मंगल, कर्तव्‍यपालन और न्‍यायोचित व्‍यवहार है। इसकी स्‍थापना के लिए राम ने विश्‍वामित्र के साथ जाकर ताड़का सुबाहु आदि का वध किया। इसी प्रकार रावण की युद्धनीति थी। वह प्रजा को उचित न्‍याय देना चाहता था, उचित न्‍याय, रोजगार, उपचार प्राप्‍त हो। प्रजा अपने कर्तव्‍य का पालन नीतिपूर्ण रूप से करे।

**रावण की प्रजा पालन नीति-**

रावण एक प्रजा पालक राजा था। यह बात स्‍वयं राम लक्ष्‍मण से कहते हैं कि, लक्ष्‍मण यदि आप प्रजा पालक नीति का ज्ञान लेना चाहते हो तो जाओ रावण से प्रजा पालक नीति की शिक्षा सीखकर आओ। तब लक्ष्‍मण ने कहा रावण हमारा शत्रु है तब राम ने कहा लक्ष्‍मण रावण जैसा नीति का ज्ञाता, ज्ञानवान, राजा कोई और नहीं है और ज्ञान शत्रु से भी मिले तो उसे ग्रहण करना चाहिए तथा रावण जैसा विद्वान इस धरातल पर दूसरा नहीं है। इस प्रसंग से रावण की प्रजा पालक तथा श्रेष्‍ठ नीतिज्ञ होने का संकेत प्राप्‍त होता है।

रावण का रूप, रावण के गुण अति प्रशंसनीय थे। उसे अनेक विधाओं और अनेक विद्ययओं का मर्मज्ञ कहा जाता है। रावण एक सफल राष्‍ट्र नायक, सेना नायक, नीति विशेषज्ञ, सफल साहित्‍यकार, संपादक, चिकित्‍सा शास्‍त्र, संगीत शास्‍त्र आदि में पूर्णज्ञाता होने के साथ-साथ सफल प्रजा पालक था। रावण राज्‍य में प्रजा पूर्णसमृद्ध, सुखी तथा स्‍वतन्‍त्र निर्विघ्‍न पूर्वक निवास करती थी। रावण प्रजा का पूर्णरूपेण ध्‍यान रखता था।

**अर्थसंग्रह-**  प्राचीन ग्रन्‍थकार एवं राजा अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष की प्राप्ति को प्रत्‍येक मानव के जीवन में मुख्‍य प्रयोजन मानते थे। इसके अभाव में राज्‍य व प्रजा का जीवन निरर्थक है।

**अर्थ का उपयोग-**  धन संग्रह की अपेक्षा उसका सदुपयोग करना अति महत्‍वपूर्ण माना गया है। हम धन अर्जित कर लेते हैं परंतु उसका सही उपयोग न करने पर नष्‍ट होता है।

**निर्माण कार्य-** रावण प्रजा के जीवन को सुखमय बनाने हेतु राजपथ, भवन आदि के निर्माण में रूचि दिखाता है। लंकानगरी में महलों, वाटिकाओं, भवनों का निर्माण अनेक प्रकार के रत्‍नों से हुआ है। लंका नगरी का सौन्‍दर्य इन्‍द्र की अमरावली को भी लज्जित करता है।

**शिक्षा-** रावण अपनी प्रजा हेतु शिक्षा की व्‍यवस्‍था का प्रजा पालक नीति का प्रधान अंग मानता है। क्‍यों शिक्षित प्रजा ही राज्‍य के कल्‍याण के बारे में विचार एवं सहयोग कर सकती है।

**स्‍वास्‍थ्‍य व्‍यवस्‍था-**  किसी राज्‍य अथवा राष्‍ट्र की स्‍वस्‍थ प्रजा ही उस राज्‍य की वास्‍तविक सम्‍पत्ति है। राज्‍य की अर्थ व्‍यवस्‍था व सुरक्षा व्‍यवस्‍था में सहयोग हेतु प्रजा का निरोग अथवा स्‍वस्‍थ रहना अति आवश्‍यक है।

**निष्कर्ष**

रावण शासित राज्‍य अत्‍यन्‍त विकसित समृद्ध एवं सुरक्षित माना जाता है। मूलत: लंका सागर के मध्‍य त्रिकूट पर्वत पर बसी है। अत: उस तक पहुंचने का आधारत: कोई मार्ग नहीं है। वहां तक पहुंचने के लिए दो मार्ग प्रसस्‍त हैं। एक जलमार्ग दूसरा आकाश मार्ग और ये दोनों ही सामान्‍यत: कठिन हैं।

रावण अपनी राज्‍य सीमा सुरक्षा को लेकर सदैव सतर्क रहता है तथा लंका के अतिरिक्‍त भी रावण राज्‍य का विस्‍तार स्‍वीकार किया जाता है। वहां भी सीमा सुरक्षा की दृष्टि से रावण श्रेष्‍ठ योद्धाओं को सीमा सुरक्षा की चारों तरफ एवं प्रत्‍येक भवन पर सुरक्षा की दृष्टि से रक्षकों को तैनात रखता है।

हनुमान सूक्ष्‍म रूप धारण कर रात्रि के अंधेरे में प्रवेश करने का प्रयास करते हैं, लेकिन तब भी लंकिनी नाम की राक्षिसा उन्‍हें देख लेती है।

इससे रावण की सुरक्षा नीति दिखाई देती है। राम चरित मानस में भी वर्णन किया गया है।

रावण की सीमा सुरक्षा को लेकर एक बात निष्‍पक्षता से स्‍वीकार की जा सकती है। रावण राज्‍य की प्राय: चौकियों पर रावण ने स्त्रियों को तैनात किया है। जैसे- ताड़का, सूर्पणखा, सिंहिका, लंकिनी आदि अशोक वाटिका में सीता की सुरक्षा हेतु भी स्त्रियां तैनात थीं। अत: कहा जा सकता है कि रावण दूतनीति, गुप्‍तचर नीति, तत्‍कालीन अस्‍त्र-शस्‍त्र, वायुयान आदि के द्वारा अपनी लंका को पूर्ण सुरक्षा प्रदान करता था तथा रावण की सीमा सुरक्षा पर संदेह नहीं किया जाता बल्कि समाज को रावण की सुरक्षा नीति को स्‍वीकार करते हुए उसको अपनाना चाहिए।

संदर्भ

1. श्रीमद वाल्मीकि रामायण: (3 खंडों में), गीता प्रेस, गोरखपुर, 1992। श्रीमदावल्मीकिय रामायण: (7 खंडों में सेट), टीकाकारों के साथ, श्रीकृष्णदासा शेषमाराजा (सं।) नाग प्रकाशक, दिल्ली, 1990।

2. भार्गव, पी। एल .: वैदिक युग में भारत, ऊपरी भारत प्रकाशन हाउस प्रा.लि. लखनऊ, 1971।

3. डेनिंग, ए.टी. धर्म, कानून और राज्य- भारत में, फेबर और फेबर, लंदन, 1968।

4. बसु, डी.डी. हिंदू लॉ एंड द संविधान, ईस्टर्न लॉ हाउस, कलकत्ता, 1983।

5. https://www.quora.com/How-is-the-Ramayana-helpful-in-administration

6. लिमया, विश्वनाथ: वाल्मीकि के अतीसिक राम: शस्त्रग्रही राम (हिंदी) मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1987।

7. आपस्तंब-धर्म-सूत्र: (मिश्रा श्री हरदत्त के लिए उज्जवला टीका के साथ), पांडेय, उमेश चंद्र (सं।), चौखम्बा संस्कृत श्रृंखला कार्यालय, वाराणसी, 1969।

8. गोयल, डी। आर। सुप्रीम कोर्ट, सिविल कोड और बी.जे.पी. गेम प्लान, नेशन एंड द वर्ल्ड, माई, 1995।

9. सिंह, एम। पी।, वी। एन। शुक्ला का भारत का संविधान (ईस्टर्न बुक कंपनी, लखनऊ, 2012)।

10. टकवानी, सी। के। सिविल प्रक्रिया (ईस्टर्न बुक कंपनी। लखनऊ, 2009)।

11. पिल्लई, के। एन। चंद्रशेखर, आर। वी। केलकर की आपराधिक प्रक्रिया (ईस्टर्न बुक कंपनी। लखनऊ, 2008)।

12. जॉन एच। लैंगबिन, जर्मन लाभ सिविल प्रक्रिया में, 52 यू ची। एल। रेव। 823 (1985)।

13. एक ध्वनि कानूनी प्रणाली और सस्ती कीमत पर अन्याय के प्रशासन के लिए प्रभावी मशीनरी किसी भी सभ्य समाज की नींव हैं डॉ। मनमोहन सिंह - दीक्षांत समारोह नेशनल लॉ स्कूल ऑफ इंडिया विश्वविद्यालय, 1994।

14. आइबिड, कला। 32

15. राज कुमारी अग्रवाल, न्यायालयों और विधानसभाओं का इतिहास, (मिनात्तूर जोसेफ), द इंडियन लीगल सिस्टम 1978. 5 इबिड।